वर्ष: 2026 | वॉल्यूम: 02 | अंक: 03 | कुल अंक: 04

शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं में कर्मवाद : भारतीय चिंतन परम्परा के विशेष परिप्रेक्ष्य में

शिखा सिंह
शोधार्थी
बोधकथा शोध संस्थान
शिवलोक, गोरखपुर उ. प्र.

सारांश– यह शोध-पत्र भारतीय चिंतन में कर्मवाद की बहुआयामी अवधारणा का सूक्ष्म परीक्षण प्रस्तुत करता है। भारतीय दार्शनिक परम्परा में कर्म को केवल क्रिया नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास की आधार शक्ति माना गया है। शोध का मुख्य उद्देश्य चार प्रमुख स्रोतों—भगवद्गीता, पतंजलि योगदर्शन, कबीर के दोहे तथा शिव नारायण सिंह की बोध कथाओं में निहित कर्मवाद के रूपों, उद्देश्यों तथा दार्शनिक सरोकारों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। भगवद्गीता में कर्मयोग 'निष्काम भाव', 'कर्त्तव्य-पालन' तथा 'अहंकार का विसर्जन' पर आधारित है । योगदर्शन कर्म योग के मार्ग में उत्पन्न मानसिक संस्कारों को निर्मल बनाने का साधन है।

कबीर के दोहों में कर्मवाद सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ में आता है—जहाँ कर्म को नैतिक, व्यावहारिक और आत्मिक उन्नति का माध्यम कहा गया है तथा शिव नारायण सिंह की कथाओं में कर्मवाद अत्यन्त लोक-व्यावहारिक रूप में मिलता है। उनकी कथाएँ श्रम, कत्तर्व्य-निष्ठा, गुरु-शिष्य सम्बन्ध, चरित्र-निर्माण और जीवन-आदर्शों के निर्माण में कर्म को मूल तत्व मानती हैं। इन चारों ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन दर्शाता है कि भिन्न ऐतिहासिक, सामाजिक और भाषाई संरचनाओं के बावजूद, इन सभी में कर्म को स्व-विकास, नैतिक पहचान, आत्मसाक्षात्कार और लोक कल्याण का केन्द्रीय तत्व माना गया है। प्रस्तुत शोध यह स्थापित करता है कि कर्मवाद भारतीय चिंतन में एक सतत, बहुरंगी और व्यावहारिक दर्शन है, जो आध्यात्मिकता और जीवन-दृष्टि दोनों को समान रूप से प्रभावित करता है तथा शिव नारायण सिंह जी की बोधकथाओं में इसकी व्यापकता अत्यन्त सूक्ष्म एवं व्यावहारिक है।

बीज-शब्द– कर्म, कर्त्तव्य, बोध, दर्शन, भगवद्गीता, कबीर, पतंजलि, कथा

प्रस्तावना- भारतीय शिक्षा परम्परा में शिक्षक को केवल ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि जीवन का मार्गदर्शक माना गया है। ऐसे ही प्रेरणादायक शिक्षक और विद्वान के रूप में शिव नारायण सिंह का नाम अत्यन्त सम्मान के साथ लिया जाता है। वे न केवल एक कुशल शिक्षक हैं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अद्भुत मार्गदर्शक भी हैं। उनके अन्दर शिक्षा के प्रति समर्पण, छात्रों के प्रति सम्भाव और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की गहरी भावना प्रकट होती है। उनका कहना है कि वे शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रखते, बल्कि जीवन के बारे में बताते हैं एक आदर्श शिक्षक के रूप में वे विद्यार्थियों को केवल पढ़ाते ही नहीं, बल्कि उन्हें सही दिशा में विचार और निर्णय लेने की प्रेरणा भी देते हैं। शिव नारायण सिंह उत्तर प्रदेश के एक छोटे से जनपद देवरिया में देश के भविष्य के निर्माताओं के निर्माणस्थली अर्थात् विद्यालय के संस्थापक प्राचार्य हैं, जिनका उद्देश्य यह है कि वह अपने विद्यार्थियों को वर्तमान सामाजिक परिवेश के अनुरूप तैयार कर सकें। उनकी बोधकथाएँ और कथात्मक रचनाएँ किस प्रकार लोकभाषा, सहज शैली और कथोपकथन की पद्धति के माध्यम से कर्मवाद को पुनर्जीवित करती हैं। उनके साहित्य में कथा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि वह जीवन-दर्शन, सामाजिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त माध्यम बनकर उभरती हैं। उनकी रचनाओं में लोकजीवन के अनुभव, नैतिक शिक्षा, सामाजिक जिम्मेदारी तथा मानवीय सह-अस्तित्व की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जो वाचिक परम्परा की मूल

विशेषताओं से साम्य रखती है। शिव नारायण सिंह ने इस कर्मवाद की परम्परा को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं।

एक शिक्षक के ऊपर सबसे बड़ा उत्तरदायित्व भावी पीढ़ी के अन्दर नैतिक चेतना, सामाजिक चेतना, राजनैतिक चेतना व भौगोलिक चेतना जैसे मूल्यों को विकसित करना है। हमारे भारतवर्ष व समाज में ऐसे मानवीय मूल्यों को स्पष्टता प्रदान करने की जिम्मेदारी शिक्षकों के ही कन्धों पर है। शिव नारायण सिंह अपनी इस जिम्मेदारी को भली-भाँति समझते हैं और इसे पूर्ण करने का प्रयास भी करते हैं। भारतीय साहित्य में कथा-कहानी की परम्परा में केवल मनोरंजन का साधन नहीं रह रहा है, बल्कि यह जीवन का साधन, मनोरंजन और कर्म के महत्त्व को मनोरंजक माध्यम भी बना रहा है। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए शिव नारायण सिंह ने अपनी बोधकथाओं के माध्यम से समाज और विशेष रूप से विद्यार्थियों को जीवन की सही दिशा बताने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उनकी कहानियाँ सरल भाषा में गहन विचार प्रस्तुत करती हैं, जिनका मूल आधार कर्मवाद है।

उनके अन्दर शिक्षा के प्रति समर्पण, छात्रों के प्रति सम्भाव और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की गहरी भावना प्रकट होती है।उनका कहना है कि वे शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रखते, बल्कि जीवन के बारे में बताते हैं एक आदर्श शिक्षक के रूप में वे विद्यार्थियों को केवल पढ़ाते ही नहीं, बल्कि उन्हें सही दिशा में विचार और निर्णय लेने की प्रेरणा भी देते हैं। उनकी कहानियाँ विद्यार्थियों के अभिनय, अनुशासन, परिश्रम और उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास करती हैं। बच्चों को यह समझाते हैं कि जीवन में सफलता पाने में कर्म ही सबसे बड़ा साधन है, और निरन्तर प्रयास ही व्यक्ति को ऊँचाई तक पहुँचता है। वे अपनी कथाओं को केवल आदर्शवाद तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उन्हें जीवन के यथार्थ से जोड़ते हैं। उनकी बोधकथाएँ विद्यार्थियों के दैनिक जीवन, उनके संघर्ष, निर्णय और नैतिक दुविधाओं को केंद्र में रखकर रची गई हैं। यही कारण है कि उनकी कहानियाँ सीधे मन पर प्रभाव डालती हैं और श्रोता तथा पाठकों को कर्म के महत्त्व का बोध कराती हैं। वे यह स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि जीवन में सफलता और असफलता का निर्धारण भाग्य नहीं, बल्कि व्यक्ति के कर्म करते हैं।

उनकी कथाओं में कर्मवाद एक अत्यन्त सशक्त और व्यावहारिक रूप में उभरकर सामने आता है। वे यह सन्देश देते हैं कि हर व्यक्ति के सामने दो रास्ते होते हैं- एक सही कर्म का और दूसरा गलत कर्म का। व्यक्ति का चुनाव ही उसके भविष्य को निर्धारित करता है। इस प्रकार, उनकी बोधकथाएँ यह सिखाती हैं कि कर्म ही जीवन की दिशा और दशा दोनों को तय करता है। उनके द्वारा प्रस्तुत उदाहरण सरल होते हुए भी अत्यन्त गहरे अर्थ वाले होते हैं, जो श्रोता और पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करते हैं।

शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं में यह भी विशेष रूप से देखा जाता है कि वे केवल उपदेशात्मक नहीं हैं, बल्कि संवादात्मक और प्रेरणादायक हैं। वे विद्यार्थियों को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि केवल आदर्शों की बातें करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें व्यवहार में उतारना ही सच्चा कर्म है। उनकी कहानियाँ व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनने, कठिन परिस्थितियों में भी सही निर्णय लेने और अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा देती हैं।

आधुनिक युग में जहाँ भौतिकता और प्रतिस्पर्धा ने नैतिक मूल्यों को चुनौती दी है, वहाँ शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ कर्मवाद के माध्यम से एक संतुलित और सकारात्मक जीवन दृष्टि प्रदान करती हैं। वे यह सिद्ध करते हैं कि सच्ची सफलता वही है जो ईमानदार और सत्कर्मों के आधार पर प्राप्त की जाए। उनकी कथाएँ यह भी बताती हैं कि हर कर्म का परिणाम अवश्य मिलता है, इसलिए व्यक्ति को सदैव अच्छे कर्मों का चयन करना चाहिए।

शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं में कर्मवाद केवल एक दार्शनिक सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत नहीं होता, बल्कि वह जीवन के व्यावहारिक सत्य के रूप में उभरकर सामने आता है। उनकी कथाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि मनुष्य का वर्तमान और भविष्य उसके कर्मों की परिणति है। इस प्रकार, वे भाग्यवाद की अपेक्षा कर्मवाद को अधिक महत्त्व देते हुए यह स्थापित करते हैं कि व्यक्ति स्वयं अपने जीवन

का निर्माता है।

उनकी बोधकथाओं में बार-बार यह विचार उभरता है कि प्रत्येक मनुष्य के सामने जीवन में अनेक विकल्प उपस्थित होते हैं। ये विकल्प ही उसके कर्मक्षेत्र का निर्माण करते हैं। सही और गलत के बीच चयन करना ही वास्तविक परीक्षा है, और यही चयन आगे चलकर उसके जीवन की दिशा निर्धारित करता है। शिव नारायण सिंह इस सत्य को अत्यन्त सरल और प्रभावशाली कथानकों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं, जिससे श्रोता और पाठक सहज रूप से इस गूढ़ विचार को आत्मसात कर लेता है।

कर्मवाद का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष उनकी कथाओं में 'परिणाम की अनिवार्यता' के रूप में सामने आता है। वे यह स्पष्ट करते हैं कि कोई भी कर्म निष्फल नहीं जाता। प्रत्येक कर्म का प्रतिफल निश्चित होता है चाहे वह तुरन्त मिले या समय के साथ। इस दृष्टि से उनकी बोधकथाएँ नैतिक अनुशासन और आत्म-जवाबदेही की भावना को सुदृढ़ करती हैं। श्रोता और पाठक यह समझने लगता है कि उसके द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य उसके जीवन को प्रभावित करता है। इन्होंने अपनी बोधकथाओं के माध्यम से कर्मवाद को न केवल स्पष्ट किया है, बल्कि उसे जीवन में उतारने योग्य भी बनाया है। उनकी रचनाएँ आज के विद्यार्थियों और समाज के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती हैं, जो उन्हें सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार, उनका साहित्य कर्मप्रधान जीवन की सशक्त वकालत करता है और मानव जीवन को सार्थक बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

इसके अतिरिक्त, उनकी कथाओं में कर्मवाद का सम्बन्ध केवल व्यक्तिगत सफलता से नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व से भी जोड़ा गया है। वे यह दर्शाते हैं कि व्यक्ति के कर्म समाज पर भी प्रभाव डालते हैं। यदि व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन ईमानदारी और निष्ठा से करता है, तो वह न केवल अपने जीवन को संवारता है, बल्कि समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन लाता है। इस प्रकार, शिव नारायण सिंह का कर्मवाद व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर सन्तुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। अंततः, यह कहा जा सकता है कि शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं में कर्मवाद एक जीवन्त और प्रेरणादायक तत्व के रूप में उपस्थित है। उनका यह दृष्टिकोण पाठकों को निष्क्रियता से निकालकर सक्रिय, जागरूक और उत्तरदायी जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार, उनका साहित्य न केवल ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि जीवन को सही दिशा में अग्रसर करने का मार्ग भी दिखाता है। उनकी कथाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि मनुष्य का वर्तमान और भविष्य उसके कर्मों की परिणति है। इस प्रकार, वे भाग्यवाद की अपेक्षा कर्मवाद को अधिक महत्त्व देते हुए यह स्थापित करते हैं कि व्यक्ति स्वयं अपने जीवन का निर्माता है।

उनकी बोधकथाएँ यह सिखाती हैं कि कर्म ही जीवन की दिशा और दशा दोनों को तय करता है। उनके द्वारा प्रस्तुत उदाहरण सरल होते हुए भी अत्यन्त गहरे अर्थ रखते हैं, जो श्रोता और पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी कथाओं में कर्मवाद का अत्यन्त सशक्त और व्यावहारिक रूप उभरकर सामने आता है। वे यह सन्देश देते हैं कि हर व्यक्ति के सामने दो रास्ते होते हैं-एक सही कर्म का और दूसरा गलत कर्म का। व्यक्ति का चुनाव ही उसके भविष्य को निर्धारित करता है। इस प्रकार, उनकी बोधकथाएँ यह सिखाती हैं कि कर्म ही जीवन की दिशा और दशा दोनों को तय करता है। उनके द्वारा प्रस्तुत उदाहरण सरल होते हुए भी अत्यन्त गहरे अर्थ रखते हैं, जो श्रोता और पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करते हैं।

कर्मवाद का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष उनकी कथाओं में 'परिणाम की अनिवार्यता' के रूप में सामने आता है। वे यह स्पष्ट करते हैं कि कोई भी कर्म निष्फल नहीं जाता। प्रत्येक कर्म का प्रतिफल निश्चित होता है- चाहे वह तुरन्त मिले या समय के साथ। इस दृष्टि से उनकी बोधकथाएँ नैतिक अनुशासन और आत्म-जवाबदेही की भावना को सुदृढ़ करती हैं। श्रोता और पाठक यह समझने लगता है कि उसके द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य उसके जीवन को प्रभावित करता है। इस शोध के अन्तर्गत उनकी बोधकथाओं तथा साहित्यिक कृतियों का अध्ययन कर यह समझने का प्रयास

किया गया है कि उन्होंने किस प्रकार कथन-शैली, प्रतीकों और लोकानुभव के माध्यम से कर्मवाद आधुनिक सन्दर्भों में पुनर्स्थापित किया है।

कर्म की अवधारणा एवं कर्मवाद-

कर्म– "यत् कुर्वन्ति तत् कर्म।"

जो कार्य किए जाते हैं, उन्हें कर्म कहते हैं।1

"कर्त्तव्यस्यक्रिया कर्म कर्मनान्यदपेक्षते।"

कर्त्तव्य की क्रिया को कर्म कहते हैं। कर्म को किसी दूसरे कारण की अपेक्षा नहीं होती।"2

कर्मवाद– कर्मवाद की प्रथम अनुभूति वैदिक यज्ञ के विधान में होती है। वैदिक विश्वास के अनुसार यदि यज्ञ का विधिवत् संपादन किया जाए तो उससे एक अदृश्य शक्ति उत्पन्न होती है। इसे अदृष्ट अथवा अपूर्व कहते हैं। यही उचित अवसर आने पर यज्ञ के वांछित फल को उत्पन्न करती है। इस प्रकार यज्ञ का फल मनुष्य को अवश्य प्राप्त होता है। इस कर्म और फल के सम्बन्ध की सार्वभौम नियम के रूप में अभिव्यक्ति सर्वप्रथम ऋग्वेद के ऋत के सिद्धान्त में मिलती है जो जगत् की भौतिक तथा नैतिक व्यवस्था का आधार है। देवता तथा मनुष्य सभी इसका पालन करते हैं।

कर्म का शाश्वत तथा सार्वभौम नियम जगत् की नैतिक व्यवस्था का आधार है। इसका और अधिक स्पष्ट रूप में प्रतिपादन उपनिषदों में किया गया है। बृहदारण्यक के अनुसार मनुष्य का कर्म ही उसके साथ जाता है। मनुष्य अच्छे बुरे जो भी कर्म करता है उसके लिए नैतिक दृष्टि से वह पूर्ण रूप से जिम्मेदार है। शिव नारायण सिंह की कथाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि मनुष्य का वर्तमान और भविष्य उसके कर्मों की परिणति है। इस प्रकार, वे भाग्यवाद की अपेक्षा कर्मवाद को अधिक महत्त्व देते हुए यह स्थापित करते हैं कि व्यक्ति स्वयं अपने जीवन का निर्माता है।

शिव नारायण सिंह एवं भगवद्गीता में कर्मवाद की एकरूप धारा– भारतीय दर्शन में भगवद्गीता कर्मवाद का सर्वश्रेष्ठ शास्त्रीय आधार प्रस्तुत करती है, जहाँ कर्म को न केवल कर्त्तव्य, बल्कि आध्यात्मिक साधना और जीवन-धर्म के रूप में समझाया गया है। गीता का सन्देश— निष्काम कर्म, कर्त्तव्य- पालन और समत्वभाव—मानव जीवन को सन्तुलित, अनुशासित और उद्देश्यपूर्ण बनाता है। इसी कर्म- दर्शन की व्यावहारिक एवं जीवन- स्पर्शी व्याख्या हमें शिव नारायण सिंह के शिक्षण और व्यक्तित्व में दिखाई देती है। उनके विचारों में वही स्पष्टता, दृढ़ता और जीवन-समीपता है जो गीता के कर्मयोग में दिखाई देती है। उन्होंने अपनी शिक्षण-पद्धति और कथाओं में कर्मवाद को व्यावहारिक रूप देकर यह सिद्ध किया है कि कर्म न केवल आध्यात्मिक आदर्श है, बल्कि मनुष्य के दैनिक जीवन का वास्तविक आधार भी है।

गीता में लिखित श्लोक -

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

अर्थः तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, फल पर नहीं। फल को कारण मत मानो और अकर्म में भी आसक्त मत हो।"3

इसकी सापेक्षता तथा इसका व्याख्यान करते हुए विद्यार्थियों से...' (खण्ड- एक) 'उत्कृष्टता' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "प्रिय विद्यार्थियों, किसी गाँव में एक गरीब लोहार था। लोहार का काम आप जानते ही होंगे। वह लोहार हथौड़े बनाने का काम करता था। उस लोहार का बड़ा नाम था, बड़ी प्रसिद्धि थी। दूर-दूर से लोग हथौड़ा खरीदने आया करते थे उसके पास। वह पूरी मेहनत एवं ईमानदारी से अपने काम में लगा रहता था और उसके इसी काम के कारण उसकी प्रसिद्धि थी।

प्रिय विद्यार्थियों, वह हथौड़ा बनाने वाला लोहार अनपढ़ है, बहुत पढ़ा-लिखा नहीं है, उसे देश-दुनिया की बहुत जानकारी भी नहीं है लेकिन उसके अन्दर ऐसा क्या है ? आप समझ सकते हैं। उसके अन्दर अपने कार्य के प्रति समर्पण हैं | जो भी कार्य वह कर रहा है, जो भी हथौड़ा वह बनाता है उस एक-एक हथौड़े पर वह अपनी सारी शक्ति लगा देता है, अपनी सारी योग्यता लगा देता है, अपनी सारी बुद्धि लगा देता है। प्रत्येक हथौड़े को अपना प्रतीक हथौड़ा समझकर काम करता है, अपना मानदण्ड समझकर बनाता है। क्या आप ऐसा कर सकते हैं ? क्या आप ऐसा कर पाते हैं ?"4

इसी प्रकार विद्यार्थियों से...' (खण्ड- पाँच) 'यत्न

देवो भव' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "जेल में बन्द होने पर वहाँ की व्यवस्था के अनुरूप कार्य करना होता है। आपको शायद नहीं मालूम होगा कि जेल में खाने-पीने के बदले काम करना जरूरी है, या फिर पैसा जमा करना होता है। बहुत नामिनल पैसा होता है, टोकन मनी होती है। अगर आप जमा कर दें तो आपको काम नहीं करना होगा, अन्यथा काम करना होगा। एक व्यक्ति उनमें ऐसा था जो दिन-रात काम में लगा रहता। अगर काम नहीं होता तो कैदियों को पढ़ाने लगता। उसके बाद कुछ समय मिलता तो स्वयं पढ़ने लगता , कभी फूल-पौधों की देखभाल करने लगता, तो कभी सफाई का काम करने लगता।

प्रिय विद्यार्थियों, आपके सामने भी अवसर है। आपको भी कर्म का पुजारी होना चाहिए। जिस दिन आप कर्मयोग को साध लेंगे, जिस दिन आप लग जाएँगे, जब आप लगे रह जाएँगे एक तरह से कहा जाय कि जो भी आपका उददेश्य है, जो भी आप कर रहें हैं उसमे पूरी तन्मयता से लगें आपके सामने लक्ष्य है. लग जाएँगे, जूझने लगेंगे तो निश्चित रूप से आपको भी दुनिया जानेगी और आप अपने लक्ष्य पर होंगे।

कोई काम छोटा-बड़ा नहीं होता। मैंने पहले भी आपको बताया है, आज फिर बता रहा हूँ, जो भी काम इस समय आपके पास है परे लगन से, पूरी निष्ठा से, पूरे मनोयोग से आप उसमें भिड़ जाते हैं, तो निश्चित रूप से आपको आपका लक्ष्य मिलना ही है।

गाँधीजी की सफलता का यही रहस्य था कि वे कर्मयोगी हो गये। आप भी कर्मयोगी बनिए, आप भी उस ऊँचाई तक पहुँच जाएँगे जहाँ तक आप पहुँचना चाहते हैं और ऐसा ही होता है। जो भी कर्मयोगी हो जाता है, जो भी एकनिष्ठ हो जाता है अपने उद्देश्य के प्रति, निश्चित रूप से उसे लक्ष्य मिलता ही है। आप इस दिशा में सोचेंगे, विचारेंगे और लगेंगे। आप इस दिशा में लगे हैं, लगे रहेंगे, आप सफल हो रहे हैं , आप सफल होते रहेंगे, आप सफल हो।"5

इस सन्दर्भ में भगवद्गीता का ही एक अन्य श्लोक भी उल्लेख्य है,

"योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥

अर्थः आसक्ति छोड़कर सम्भाव से कर्म करो सफलता असफलता को समान मानें।"6

इसका व्याख्यान करते हुए विद्यार्थियों से...' (खण्ड- दो) 'आदत' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- " प्रिय विद्यार्थियों, भगवान ने कहा- इसके सच्चे अधिकारी तुम्हीं हो क्योंकि तुमने अपने कार्य को नियमित रूप से किया है। उसे कठिन से कठिन परिस्थिति यहाँ तक कहा जा सकता है जान पर खेलकर भी पूरा किया अर्थात् अपनी रुटीन में तुम्हारा इतना विश्वास है कि तुमने आगा-पीछा भी नहीं सोचा और उसे पूरा किया तो यह स्वतः तय है कि वरदान तुम्हें ही मिलना चाहिए, यही सृष्टि का विधान भी है। मैं भी इन्हीं नियमों से बँधा हुआ हूँ। जहाँ कार्य होगा वहीं परिणाम होगा। तुमने कार्य किया तो परिणाम तुम्हारे पक्ष में है और उसे मुझे तुम्हें देना-ही-देना है।

जो भी अपने कर्म को पूरी निष्ठा से करता है, भय त्यागकर करता है, पूरी ईमानदारी से करता है निश्चित रूप से भगवान उस पर प्रसन्न होते हैं। भगवान उसी से प्रसन्न होंगे जो अपने रुटीन को नित्य प्रति पूरा करेगा, हर स्थिति में पूरा करेगा। क्या आप पूरा करते हैं, जरा इस पर विचार कीजिए। यह कोई सामान्य प्रश्न नहीं है। यदि इस प्रश्न का उत्तर आप सही-सही दे पाते हैं तो फिर कोई कारण नहीं बचता कि आप अपने जीवन लक्ष्य के चरम पर न पहुँच जायें।"7

इसी सन्दर्भ में विद्यार्थियों से...' (खण्ड- दो) 'श्रमशील' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं - "प्रिय विद्यार्थियों, एक सुन्दर बागीचा। उस बागीचे में एक मधुमक्खी और एक तितली थोड़ी ही दूरी पर रहा करती थीं। थोड़े ही फासले पर रहती थीं वे दोनों। नित्य प्रति की एक ही बात थी। सुबह से ही मधुमक्खी अपने काम में लग जाया करती थी, तितली भी उसके आस-पास ही अपनी दिनचर्या पूरी करती।

शायद आपने इसे महसूस किया हो, न भी किया हो; तितली और मधुमक्खी दोनों के साथ परिवेश एक ही है, परिस्थितियाँ एक ही है। जैसी परिस्थितियाँ और परिवेश मधुमक्खी को मिली हैं, ठीक वही परिस्थितियाँ और परिवेश तितली को भी मिली हैं,

लेकिन दोनों के जीवनयापन में, दोनों के क्रियाकलाप में और दोनों की उपलब्धियों में जमीन-आसमान का अन्तर है।

आखिर ऐसा क्यों है ? इसके पीछे कहीं-न-कहीं मधुमक्खी का अपना दृष्टिकोण है और तितली का अपना। मधुमक्खी श्रमशील है, श्रम में उसका विश्वास है, हर क्षण वह मेहनत करती है और तितली पलायनवादी है, उसे श्रम का ज्ञान नहीं है, न ही कोई भान है, उसे अपने भविष्य की भी कोई चिन्ता नहीं है और न ही वह उस बारे में सोच पा रही है।

आप जितने लोग यहाँ आते हैं, सभी को परिस्थितियाँ एक जैसी ही मिलती हैं; कहीं किसी के साथ कोई पार्शिऑलिटी होती है क्या ? ऐसा तो नहीं है कि जो पढ़ने में अच्छा है उसे ज्यादा पढ़ाया जाता है और जो अच्छा नहीं है, उसे कम पढ़ाया जाता है। जब सभी के साथ एक ही तरह की परिस्थितियाँ हैं, एक ही स्थिति है, सब कुछ एक ही जैसा है फिर रिजल्ट आने पर अन्तर क्यों हो जाता है; कभी सोचा आपने? नहीं सोचा तो अब सोच लीजिए, आज ही सोच लीजिए, जरूर सोच लीजिए।"8

भगवद्गीता का एक अन्य श्लोक -

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः अकर्मणश्च बोद्धव्यं....

अर्थः क्या कर्म है, क्या विकर्म (अनुचित कार्य), और क्या अकर्म (अकर्त्तापन) – इसका विवेक आवश्यक है।"9

इस सन्दर्भ में विद्यार्थियों से...' (खण्ड- सात) 'स्वराज' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि- "भगवान शिव ने मेढ़कों को समझाया- तुम्हारी क्या जरूरत है, तुम्हें क्या चाहिए, तुम्हारे लिए क्या उपयोगी है, यह तुमसे अच्छी तरह न तो कोई जान सकता है, न ही कोई बता सकता है। न तो कोई महसूस कर सकता है और न ही कोई समझ सकता है। इसलिए यही अच्छा है कि तुम्हें अपनी जरूरत, आवश्यकता के अनुकूल, अनुरूप मार्ग चाहिए और यह तभी सम्भव है जब तुम स्वयं अपना स्वाभिमान जागृत करोगे और अपने द्वारा की गई गलतियों का ध्यान रखकर उनसे कुछ सीख लेकर, उन्हें सुधारकर आगे बढ़ोगे। निश्चित ही, तुम सफल होगे, सुखी होगे, क्योंकि यही प्रकृति का शाश्वत नियम है। प्रकृति और प्रवृत्ति का सामंजस्य ही आगे का मार्ग प्रशस्त करता है।

प्रिय विद्यार्थियों करना क्या है? कर्म। कर्म क्या है ? प्रधान तत्व है इस जीवन का। 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा' कर्म की ही प्रधानता से सृष्टि का निर्माण है। कर्म की प्रधानता से ही आज हम हैं और कर्म की प्रधानता से ही हमें अपने जीवन का लक्ष्य मिलेगा।"10

गीता का ही एक अन्य महत्त्वपूर्ण श्लोक-

"योगः कर्मसु कौशलम्"

अर्थः योग का अर्थ केवल ध्यान नहीं- कर्म को कुशलता, समता और जागरूकता से करना भी योग है।"11

इस सन्दर्भ में विद्यार्थियों से...' (खण्ड- आठ) 'कर्म की निरन्तरता' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि-"विज्ञान भी यही कहता है कि आपके कर्म ही, कर्म को क्या कहेंगे ? कार्य ही कहेंगे न। वर्कडन वही न है जो आप करते हैं और वर्कडन क्या है ? यही वर्कडन एनर्जी में कनवर्ट होता है। एनर्जी कभी नष्ट नहीं होती है। आपके सुकर्म हों या दुष्कर्म हों वह सारे-के-सारे क्या हैं वह ऊर्जा में कनवर्ट हैं। जैसे उन्हें अवसर मिलेगा उनका एक्सपोजर होगा। आदत क्या है ? कभी का आपका कर्म है अब नहीं छूट रहा है।

अब आपकी बात है तो आप बतायें आपके साथ ऐसी कौन-सी कोशिश बाकी है, जो नहीं हो रही है। प्रत्येक कार्नर से, प्रत्येक दृष्टिकोण से, आपको सचेत करना, आपको समझाना, आपका मार्ग प्रशस्त करना और श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठतम् की ओर आपको उन्मुख करना। यहाँ इस वातावरण का, प्रतिक्षण का यही कार्य है। इसका प्रभाव शत-प्रतिशत सामने है तभी तो आप इस ऊँचाई पर हैं और आपकी इस ऊँचाई को देखकर हर कोई कह उठता है वाह ये तो प्रेस्टिज के विद्यार्थी हैं। यह आपका सौभाग्य है।

भगवद्गीता का दार्शनिक कर्मवाद और शिव नारायण सिंह का शिक्षण आधारित कर्मवाद दोनों एक ही धारा के दो प्रवाह हैं। एक ओर गीता व्यक्ति को आध्यात्मिक जागृति प्रदान करती है, तो दूसरी ओर शिव नारायण सिंह उसी कर्म सिद्धान्त को जीवन में

उतारने की प्रेरणा देते हैं। दोनों के विचार इस सत्य पर एकमत हैं। गीता का कर्मयोग मनुष्य को भीतर से जागृत करता है, उसे समत्व, निःस्वार्थता और कर्त्तव्य निष्ठा का मार्ग दिखाता है। वहीं शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ इसी सिद्धान्त को व्यावहारिक जीवन में लागू करने का मार्ग बताती हैं— अनुशासन, श्रम, जिम्मेदारी और नैतिकता के रूप में। दोनों का सार यही है कि- "कर्म ही मनुष्य का निर्माण करता है उसका वर्तमान भी और उसका भविष्य भी।"

योगदर्शन का कर्मवाद और शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ: कर्त्तव्य, अनुशासन और आत्मसाधना का समन्वय –

योगदर्शन में कर्मवाद मनुष्य को यह बोध कराता है कि कर्म ही आत्मोन्नति का सेतु है। पतंजलि के अनुसार निष्काम, संयमित और सद्गुणों से युक्त कर्म मन को शुद्ध करते हैं और चित्तवृत्तियों के निवारण में सहायक होते हैं। इसी प्रकार शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ भी कर्म के महत्त्व पर आधारित हैं जहाँ वे अपने विद्यार्थियों को यह समझाते हैं कि व्यक्ति का विकास उसके दैनिक आचरण, कर्त्तव्य निष्ठा और आत्मानुशासन पर निर्भर करता है। उनकी कथाओं में कर्म मात्र बाह्य क्रिया नहीं बल्कि चरित्र-निर्माण, युक्त आचरण और जीवन- साधना का माध्यम बनकर उभरता है।

योगदर्शन का दार्शनिक कर्मवाद और शिव नारायण सिंह की शिक्षाप्रद कथाएँ दोनों यह सन्देश देती हैं कि मनुष्य अपने प्रयासों से ही अपनी दिशा बनाता है। कर्म के प्रति जागरूकता, निरन्तरता और निष्ठा यही वह कड़ी है जो आध्यात्मिक साधना और व्यावहारिक जीवन दोनों को एकसूत्र में पिरोती है। इस प्रकार दोनों परम्पराएँ मनुष्य को यह सीख देती हैं कि कर्म ही सर्वोच्च साधना है, और यही जीवन को सार्थकता प्रदान करता है।

योगसूत्र -

"प्रवृत्तिभेदे प्रयोजकं चित्तम्।"

अर्थः प्रत्येक कर्म का प्रेरक चित्त होता है, और चित्त संस्कारों से प्रभावित है।13

इसकी सापेक्षता को सिद्ध करते हुए विद्यार्थियों से...' (खण्ड- दस) सायास बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि "प्रिय विद्यार्थियों कोई भी बड़ा कार्य इतनी आसानी से नहीं होता है। कोई भी उपलब्धि आसानी से मिलनी सम्भव नहीं है। जो करता है, वही पाता है। अगर हमारा स्वभाव बिना किए पाने का है तो हम कभी नहीं पा सकते। इसलिए हमें अपना स्वभाव इस तरह का बनाना होगा कि हमें करना है और अगर हम कर रहे हैं तो निश्चित ही हम पाएँगे और पाने की बात है तो आपको परिणाम मिल ही गया है।"14

इसी प्रकार विद्यार्थियों से...' (खण्ड- छ) 'तन्द्रा' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि "प्रिय विद्यार्थियों जब तक आप अपने ही अन्तःकरण से संचालित नहीं होंगे, केवल लकीर पीटते रहेंगे और दूसरे के बताए रास्ते पर चलते रहेंगे, तो आप कहाँ पहुँचेंगे यह पहले से तय है, यह सभी को पता है, सभी जानते हैं। लेकिन पहुँचना कहाँ है ? यह आप जानते हैं, जान ही रहे हैं, जान ही जाएँगे।

जब आपकी तन्द्रा टूटेगी, क्योंकि अभी आप होश में नहीं हैं। जैसे वह आया था चढ़ाने और स्वयं चढ़ गया। अगर वह होश में होता तो स्वयं चढ़ता क्या ? कत्तई नहीं। जब आपकी तन्द्रा टूटेगी, जब आप जागेंगे, जब आप अपने अन्दर झाकेंगे तो पाएँगे कि आपमें वह सब शक्तियाँ भरी पड़ी हैं और इसी इन्तजार में हैं कि कब आप द्वार खोल रहे हैं।" 15

योगसूत्र

"तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः।"

अर्थः तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ये तीन कर्म ही क्रियायोग हैं, जो मन को शुद्ध करते हैं।"16

इसकी सापेक्षता को सिद्ध करते हुए विद्यार्थियों से...' (खण्ड- चार) 'आवां' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि "प्रिय विद्यार्थियों , बात मेरी समझ में कुछ इस तरह आती है कि जिन बर्तनों से टनटनाहट की आवाज नहीं आ रही है, वे टूट गये हैं, बेकार हो गये हैं, लेकिन वे बर्तन जो अभी पकाये नहीं गये हैं, जिन्हें अभी आवाँ पर चढ़ाया नहीं गया है, जो अभी कच्चे हैं, उनके साथ ऐसी कोई बात नहीं है। उन्हें तो वह फिर गूँथकर, चाक पर चढ़ाकर बर्तन बना सकता है। कितनी बड़ी बात कही उसने ! जो कच्चे हैं, उन्हें वह छोड़ता नहीं है। वे उसके

काम के हैं।

आप समझ रहे हैं न, जब तक वे कच्चे रहेंगे, तब तक वह उन्हें छोड़ेगा नहीं। कितनी बार भी सांड़ रौंद जाए, कितनी बार भी वे टूट जायें, लेकिन वह उन्हें तब तक नहीं छोड़ेगा, जब तक कि वे पक करके टन-टन की आवाज न करें या तो फूट जायें, तो फेंक देगा। टन टन की आवाज करेगा, तो बेच देगा।

बात समझ में आ रही है ? जब तक कच्चे हैं, तब तक कुम्हार छोड़ने वाला नहीं है। आप अपने बारे में क्या सोचते हैं ? आपको छोड़ दिया जाए, आप भी पकेंगे, आवाँ पर चढ़ने के लिए तैयार हैं ? और क्या उसके बाद टन-टन की आवाज आएगी आपसे? हम जहाँ जीते हैं न, वहीं हम सीखते हैं, या हम जो जीते हैं वही हम बन जाते हैं।

प्रिय विद्यार्थियों, अभी ढेर सारी सम्भावनाएँ आपके साथ हैं। लक्ष्य निर्धारित कीजिए आप जैसा चाहिए बन जाइए। लेकिन जब आपका यह कच्चा होना, कच्ची उम्र जो अभी चल रही है आपकी, अगर आप इससे बाहर निकल जायेंगे, तब फिर आप कुछ नहीं बन पायेंगे। वह समय बहुत करीब है जब आपको आवाँ पर चढ़ाया जाएगा, उस समय केवल दो स्थितियाँ होंगी या तो मैंने अभी बताया आपको, पक करके वही टन-टन की आवाज आपसे भी निकलेगी, तब तो आपको सुरक्षित रखा जाएगा नहीं तो फिर फेंक दिया जाएगा।

आप स्वयं फेंकाने के लिए तैयार रहें या फिर वह स्थान पाने के लिए, जिसके लिए आप लगे हुए हैं। यह तय करना आपको है, तय कर लीजिए। कोशिश करें, लगिए, निश्चित रूप से आपको आपका लक्ष्य मिलेगा।

यही वह वक्त है, यही वह अवस्था है, यही वह उम्र है, यही वह समय है, यही वह क्षण है, जब आप अपना लक्ष्य निर्धारित करके वह सब बन सकते हैं।"17

योगदर्शन का कर्मवाद और शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ दोनों ही भारतीय चिंतन की महान धरोहर हैं, जो मनुष्य को अपने कर्म के प्रति सजग बनाती हैं। योगदर्शन जहाँ सांसारिक और आध्यात्मिक जीवन के समन्वय में कर्म को अनिवार्य मानता है, वहीं शिव नारायण सिंह की कथाएँ दैनिक जीवन में कर्म, अनुशासन और कर्त्तव्यनिष्ठा को व्यावहारिक रूप से स्थापित करती हैं। दोनों ही मान्यताओं में यह सार्वभौमिक सत्य निहित है कि कर्म ही मनुष्य का वास्तविक परिचय और उसकी उन्नति का साधन है। इस प्रकार, योगदर्शन का दार्शनिक कर्मवाद और शिव नारायण सिंह की व्यावहारिक बोधकथाएँ मिलकर यह सन्देश देती हैं कि जीवन में सफलता, शान्ति और साधना तीनों का मूल एक ही है: सजग, संयमित, निष्ठापूर्ण कर्म।

कर्म की महत्ता कबीर के दोहों और शिव नारायण सिंह की बोधकथाओं में समान जीवनदर्शन – भारतीय चिंतन परम्परा में कर्म को सदैव जीवन का केन्द्र-बिन्दु माना गया है। कबीर के दोहे हों या शिव नारायण सिंह की बोधकथाएँ दोनों ही मनुष्य के जीवन में कर्म की अनिवार्यता, निष्ठा और जिम्मेदारी का सन्देश देते हैं। कबीर अपने सहज और मार्मिक दोहों के माध्यम से बताते हैं कि कर्म ही मनुष्य की पहचान है; केवल वचन या बाहरी आडम्बर से नहीं, बल्कि सत्कर्मों से ही जीवन सफल होता है। इसी प्रकार शिव नारायण सिंह अपनी शिक्षाप्रद कथाओं में यह स्पष्ट करते हैं कि मेहनत, कर्त्तव्य-पालन और अनुशासन ही मनुष्य को उन्नति और सम्मान की ओर ले जाते हैं।

दोनों की शिक्षाओं में यह समानता चमकती है कि कर्म ही सच्ची साधना है जो मनुष्य के चरित्र, भाग्य और भविष्य का निर्माण करती है। इस प्रकार कबीर के दोहे और शिव नारायण सिंह की कथाएँ कर्मवाद को आध्यात्मिक तथा व्यावहारिक दोनों आयामों में प्रस्तुत करती हैं, और मनुष्य को कर्मनिष्ठ होने की प्रेरणा देती हैं।

दोहाः

"बिनु करमा जो पावई, सो कहु किसको देइ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, करम बिना सब दै।।"

भावार्थ – कर्म किए बिना कोई फल नहीं मिलता भाग्य को दोष देना व्यर्थ है।"18

इसकी सापेक्षता को सिद्ध करते हुए विद्यार्थियों से...' (खण्ड- दस) 'लगनशीलता' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं "प्रिय विद्यार्थियों , कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। इस दुनिया में, इस संसार में कर्म की ही प्रधानता है। कर्म का सिद्ध

होना ही सर्वसिद्धि का विधान है। तुम आश्रम में रह रहे हो और इस आश्रम का एक ही उद्देश्य है, इस आश्रम में किसी के आने का एक ही कारण है कि यहाँ कर्म की शिक्षा दी जाती है, यहाँ कर्म का महत्त्व बताया जाता है। यहाँ कर्म से ज्ञान प्राप्ति की ओर मार्ग जाता है समय के साथ तुम्हारा भी कर्म जागृत हो जाएगा और वह सब तुम्हें मिल जाएगा, जिसकी पात्रता तुम अपने अन्दर सिद्ध कर सकोगे, सिद्ध कर लोगे।"19

दोहाः

"करम करै सो फल पावै, और करै सो खाय।
करम बिना कोऊ नाहीं, कबीर कहै सुनाय।।"

भावार्थ – मनुष्य जो कर्म करता है, वही उसे फल देता है। परजीवी जीवन से बचने की शिक्षा।"20

इसी सन्दर्भ में विद्यार्थियों से...' (खण्ड- तीन) 'अंतः प्रेरणा' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि "प्रिय विद्यार्थियों ,जैसे बहती हुई नदी, चट्टान के सामने आने पर न तो बहना छोड़ देती है और न ही चट्टान से मनमुटाव कर बैठती है, न तो झगड़ा कर बैठती है, न ही उलाहना देती है। हाँ, वह थोड़ा-सा किनारा कर लेती है और अपने गन्तव्य पर पहुँचकर ही रुकती है, उससे पहले कभी कहीं रुकती ही नहीं। वैसे ही हमारा आपका जीवनक्रम है, इसमें सुख-दुःख, सम-विषम परिस्थितियाँ, अच्छे और बुरे दिन आगे- पीछे चलते रहते हैं। जरूरत है इन कठिनाइयों को, इन परेशानियों को, इन कमजोरियों को, इन दिक्कतों को सह लेने की, बर्दाश्त कर लेने की और हर क्षण अपना कदम आगे बढ़ाते रहने की। यह ध्रुव सत्य है।

प्रिय विद्यार्थियों, आपका यह समय कुछ इसी तरह का है, इन दिनों आपको बहुत कठिनाइयाँ होती हैं, बहुत पेशेंस रखना पड़ता है, बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। लेकिन यही मेहनत जब रंग लाती है तब बात आपकी समझ में आती है। अगर आपने मेहनत से कुछ एचीव किया है तो उसका अपना अलग ही सुख है, उसका अलग ही आनन्द है।"21

इसी प्रकार एक अन्य कथा विद्यार्थियों से...' (खण्ड- पाँच) में 'कर्त्तव्यपरायण' बोधकथा के माध्यम से शिव नारायण सिंह जी कहते हैं कि "प्रिय विद्यार्थियों, अगर आप एक बार में सफल नहीं होते हैं, तो पुनः कोशिश कीजिए एक बार और कोशिश कीजिए, एक बार और कोशिश करके देखिए। निश्चित ही आप परिणाम के करीब पहुँच रहे होंगे। लेकिन ऐसा आपको एहसास नहीं होता है। जिन्हें इस बात का एहसास है कि अगर हम कोशिश करते हैं, लगे रहते हैं, तो निश्चित रूप में कल परिणाम हमारे पक्ष में होगा तो वे निश्चित ही सफल होते हैं।"22

कबीर के दोहे और शिव नारायण सिंह की कथाएँ दोनों यह स्थापित करती हैं कि कर्म ही मनुष्य के जीवन की धुरी है। कबीर का कर्मवाद आध्यात्मिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर मनुष्य को सक्रिय करता है, वहीं शिव नारायण सिंह का कर्मवाद व्यावहारिक, शिक्षणात्मक और चरित्र-निर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है।

निष्कर्ष– इन सभी ग्रंथों का तुलनात्मक विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि कर्मवाद केवल दार्शनिक सिद्धान्त नहीं, बल्कि जीवन- व्यवहार का आधार, नैतिक अनुशासन की नींव, और आत्मिक जागृति का मार्ग है। भारतीय दर्शन में 'कर्म' व्यक्ति को कर्त्तव्यनिष्ठ, जीवनोन्मुख, आत्मसंयमी और समाजोपयोगी बनाने वाला तत्व है। इस शोध से उद्भूत एकीकृत दृष्टिकोण यह बताता है कि चाहे आध्यात्मिक उन्नति का लक्ष्य हो, योग-साधना का शुद्धिकरण, सामाजिक चेतना, या शिक्षकीय जीवन मूल्य कर्म ही वह बिन्दु है जहाँ सभी मार्ग मिलकर एक साझा भारतीय चिंतन दृष्टि का निर्माण करते हैं। इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि कर्मवाद भारतीय दार्शनिक परम्परा की सबसे व्यापक, निरन्तर और सर्वमान्य अवधारणा है। यद्यपि भगवद्गीता, योगदर्शन, कबीर और शिव नारायण सिंह की कथाएँ अलग-अलग युगों और सामाजिक सन्दर्भों से आती हैं। तब भी सभी में कर्म की विचारधारा का ही समावेश हुआ है।

शिव नारायण सिंह अपनी सभी बोध कथाओं में अलग अलग ग्रंथों, प्रेरक प्रसंग, श्रेष्ठ तथा महान व्यक्तित्व का उदहारण देते हुए विद्यार्थियों को कर्म के ही उन्नत मार्ग पर चलने को प्रेरित करते हैं, उनकी सभी कथाओं में निरन्तर निष्काम कर्म, आसक्ति निहित होकर, पूर्ण संकल्प से , स्व मनोबल से अतएव

हर सम्भव प्रयास से कर्म करने का सार मिलता हैं । उनकी बोधकथाओं में कर्म और नैतिकता का गहरा सम्बन्ध दिखाई देता है। वे यह सन्देश देते हैं कि केवल कर्म करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि कर्म का स्वरूप भी महत्त्वपूर्ण है। सत्कर्म ही वास्तविक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं, जबकि दुष्कर्म अंततः पतन का कारण बनते हैं। इस सन्दर्भ में उनकी कथाएँ जीवन के नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित करने का कार्य करती हैं।

सन्दर्भ सूची –

1. चरक, चरक संहिता (सूत्रस्थान), काशीनाथ शास्त्री एवं गोरखनाथ चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित, वाराणसी चौखम्भा भारती अकादमी; 2023, पृष्ठ संख्या- 12
2. चरक, चरक संहिता (सूत्रस्थान), काशीनाथशास्त्री एवं गोरखनाथ चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित, वाराणसी चौखम्भा भारती अकादमी; 2023, पृष्ठ संख्या- 13
3. वेदव्यास श्रीमद्भगवद्गीता,सम्पादक. जयदयाल गोयन्दका, गोरखपुर गीता प्रेस; नवीनतम संस्करण. पृष्ठ संख्या- 42
4. शिव नारायण सिंह 'विद्यार्थियों से...' खण्ड 01, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या-15
5. शिव नारायण सिंह 'विद्यार्थियों से...' खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या-162
6. वेदव्यास, श्रीमद्भगवद्गीता, सम्पादक जयदयाल गोयन्दका, गोरखपुर गीता प्रेस; नवीनतम संस्करण. पृष्ठ संख्या- 42–43
7. शिव नारायण सिंह 'विद्यार्थियों से...' खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या-55
8. शिव नारायण सिंह 'विद्यार्थियों से...' खण्ड 02, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या-33
9. वेदव्यास, श्रीमद्भगवद्गीता, सम्पादक जयदयाल गोयन्दका, गोरखपुर गीता प्रेस; नवीनतम संस्करण. पृष्ठ संख्या- 122
10. शिव नारायण सिंह 'विद्यार्थियों से...' खण्ड 07, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या-373
11. वेदव्यास, श्रीमद्भगवद्गीता, सम्पादक जयदयाल गोयनका, गोरखपुर गीता प्रेस; नवीनतम संस्करण. पृष्ठ संख्या- 44
12. शिव नारायण सिंह 'विद्यार्थियों से... संचयन', प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या-410
13. पतञ्जलि, योगदर्शन (योगसूत्र), सम्पादक हनुमान प्रसाद पोद्दार एवं जयनारायण विद्यालंकार, गोरखपुर गीता प्रेस; नवीनतम संस्करण, पृष्ठ संख्या-66
14. शिव नारायण सिंह 'विद्यार्थियों से...' खण्ड 10, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या-640
15. शिव नारायण सिंह 'विद्यार्थियों से...' खण्ड 06, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या-220
16. पतंजलि, योगदर्शन (योगसूत्र), सम्पादक हनुमान प्रसाद पोद्दार एवं जयनारायण विद्यालंकार, गोरखपुर गीता प्रेस; नवीनतम संस्करण, पृष्ठ संख्या-37
17. शिव नारायण सिंह 'विद्यार्थियों से...' खण्ड 4, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या-19
18. कबीर, साखी संग्रह, सम्पादकः सन्त विवेकदास आचार्य, पटना रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन; 2022, 10वाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या – 289
19. शिव नारायण सिंह 'विद्यार्थियों से... संचयन', प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या-551
20. कबीर, साखी संग्रह, सम्पादक सन्त विवेकदास आचार्य, पटनाः रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन; 2022, 10वाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या – 409
21. शिव नारायण सिंह 'विद्यार्थियों से...' खण्ड 03, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या-86
22. शिव नारायण सिंह 'विद्यार्थियों से...' खण्ड 05, प्रेस्टिज प्रकाशन, देवरिया, पृष्ठ संख्या-184